# Ballia Sandesh

# ई-पत्रिका

Volume-32

01-08-2018 To
31-08-2018

ichange mycity

# बलिया संदेश

## स्वच्छ बलिया - स्वस्थ बलिया

**श्री दिनेश कु० विश्वकर्मा**

**(अधिशाषी अधिकारी)**

**श्री अजय कुमार**

**(अध्यक्ष)**

नगर पालिका परिषद, बलिया के नगरवासियों को अगस्त 2018 के ई-पत्रिका बलिया संदेश में स्वागत है | *अगस्त* माह में हुये विकास कार्यो को ई-पत्रिका बलिया संदेश के द्वारा आपसब को बताना चाहता हूँ | बलिया नगर पालिका प्रत्येक माह ई-पत्रिका बलिया संदेश के द्वारा नगर पालिका में हुये विकास कार्यो को आपसब के सामने लाने का प्रयास करता हूँ , जिससे बलिया नगर पालिका परिषद के विकास और नई योजनाओं से लाभान्वित हो सके | नगर पालिका परिषद बलिया का एक मात्र उद्देश्य नगर पालिका का विकास है | जिसमे बिना किसी भेद-भाव, सभी समुदायों के लोगो को एकसाथ लेकर आगे बढने का उद्देश्य है | जिसके लिए नगर पालिका परिषद बलिया के निवासियों को इसमें सहयोग महत्वपूर्ण है, और नगर पालिका इसका उम्मीद करता है | नगरवासियों से अपील है की नगर को स्वच्छ और सुन्दर बनाने में नगर पालिका की मदद करे | अपने आस-पास साफ-सुथरा रखे| कूड़ा-कचरा डस्टबिन में रखे , गन्दगी न फैलाये | आने वाला कल अच्छा हो इसके लिये आज बेहतर बनायें |

# बलिया संदेश

# स्वच्छ बलिया - स्वस्थ बलिया

Mr. Dinesh Kumar Vishwakarma
(Executive Officer)

I am happy to present the August 2018 issue to all of you. A number of projects have been commissioned in the month of August. The former will help smoothen the flow of traffic, reduce the travel time of citizens, ease the congestion and reduce pollution on Nagar Palika Parishad Ballia's road. There have been a lot of lessons to learned and these insights will certainly stand in good stead with us in our endeavors in future. The one thing that stands out is the most active participation of citizens. We, the residence of the Nagar Palika Parishad Ballia respective of ages, castes, creeds, religions, localities have untidily participated in creation of Ballia's Swachh Nagar Palika Parishad proposal. As I look into the future with great expectation, it is this one aspect of the municipality which gives me the greatest hope. We in the Nagar Palika Parishad Ballia, would be very happy to receive your feedbacks on all matters that you feel are important.

# बलिया संदेश

## स्वच्छ बलिया - स्वस्थ बलिया

Mr. Ajay Kumar
(Chairman)

I am delighted to present the tasks and issue of Ballia Nagar Palika by e-Patrika Ballia Sandesh in August 2018. Nagar Palika Parishad Ballia is grateful to the citizens who displayed tremendous enthusiasm and whole heartedly participated in numerous activities throughout this period. All of us should bear in mind that this is not end but a beginning of the exercise pertaining to development and Swachh Mission program. The coming times will surely be very hectic and eventful. Ballia promises to leave no room for complacency and will work even harder to achieve the targets. We solicit active participation from the citizens in our endeavor. We sincerely believe that decisions taken by Nagar Palika Parishad Ballia should benefit Nagar Palika Parishad Ballia and the citizens in the ultimate analysis. Many projects process in work in Nagar Palika Parishad Ballia for development our Nagar Palika and citizens. Thanks to all citizens of Nagar Palika Parishad Ballia for supporting to develop Ballia.

# स्वतंत्रा दिवस के उपलक्ष्य में समस्त नगर वासियों को हार्दिक बधाई

आजादी कहें या स्वतंत्रता ये ऐसा शब्द है जिसमें पूरा आसमान समाया है। आजादी एक स्वाभाविक भाव है या यू कहे कि आजादी की चाहत मनुष्य को ही नहीं जीव-जन्तु और वनस्पतियों में भी होती है। सदियों से भारत अंग्रेजों की दासता में था, उनके अत्याचार से जन-जन त्रस्त था। खुली फिजा में सांस लेने को बेचैन भारत में आजादी का पहला बिगुल 1857 में बजा किन्तु कुछ कारणों से हम गुलामी के बंधन से मुक्त नही हो सके। वास्तव में आजादी का संघर्ष तब अधिक हो गया जब बाल गंगाधर तिलक ने कहा कि "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है"। अनेक क्रांतिकारियों और देशभक्तों के प्रयास तथा बलिदान से आजादी की गौरव गाथा लिखी गई है। यदि बीज को भी धरती में दबा दें तो वो धूप तथा हवा की चाहत में धरती से बाहर आ जाता है क्योंकि स्वतंत्रता जीवन का वरदान है। व्यक्ति को पराधीनता में चाहे कितना भी सुख प्राप्त हो किन्तु उसे वो आन्नद नही मिलता जो स्वतंत्रता में कष्ट उठाने पर भी मिल जाता है। तभी तो कहा गया है कि पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। जिस देश में चंद्रशेखर, भगत सिंह, राजगुरू, सुभाष चन्द्र, खुदिराम बोस, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रान्तिकारी तथा गाँधी, तिलक, पटेल, नेहरु, जैसे देशभकत मौजूद हों उस देश को गुलाम कौन रख सकता था। आखिर देशभक्तों के महत्वपूर्ण योगदान से 14 अगस्त की अर्धरात्री को अंग्रेजों की दासता एवं अत्याचार से हमें आजादी प्राप्त हुई थी। ये आजादी अमूल्य है क्योंकि इस आजादी में हमारे असंख्य भाई-बन्धुओं का संघर्ष, त्याग तथा बलिदान समाहित है। ये आजादी हमें उपहार में नही मिली है। वंदे मातरम् और इंकलाब जिंदाबाद की गर्जना करते हुए अनेक वीर देशभक्त फांसी के फंदे पर झूल गए। 13 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला हत्याकांड, वो रक्त रंजित भूमि आज भी देश-भक्त नर-नारियों के बलिदान की गवाही दे रही है। आजादी अपने साथ कई जिम्मेदारियां भी लाती है, हम सभी को जिसका ईमानदारी से निर्वाह करना चाहिए किन्तु क्या आज हम 71 वर्षों बाद भी आजादी की वास्तिवकता को समझकर उसका सम्मान कर रहे है | आज हम जिस खुली फिजा में सांस ले रहे हैं वो हमारे पूर्वजों के बलिदान और त्याग का परिणाम है। हमारी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि मुश्किलों से मिली आजादी की रुह को समझें। आजादी के दिन तिरंगे के रंगो का अनोखा अनुभव महसूस करें इस पर्व को भी आजद भारत के जन्मदिवस के रूप में पूरे दिल से उत्साह के साथ मनाएं। स्वतंत्रता का मतलब केवल सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता न होकर एक वादे का भी निर्वाह करना है कि हम अपने देश को विकास की ऊँचाइयों तक ले जायेंगें। भारत की गरिमा और सम्मान को सदैव अपने से बढकर समझेगें।

# रक्षा बंधन की शुभकामनाएँ

**रक्षा बंधन** का त्यौहार श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। उत्तरी भारत में यह त्यौहार भाई-बहन के अटूट प्रेम को समर्पित है और इस त्यौहार का प्रचलन सदियों पुराना बताया गया है। इस दिन बहने अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधती हैं और भाई अपनी बहनों की रक्षा का संकल्प लेते हुए अपना स्नेहाभाव दर्शाते हैं। पुराणों के अनुसार रक्षा बंधन पर्व लक्ष्मी जी का बली को राखी बांधने से जुडा हुआ है। इसके लिए पुराणों में एक कथा है जो इस प्रकार है - जब दानवो के राजा बलि ने अपने सौ यज्ञ पुरे कर लिए तो उन्होंने चाहा कि उसे स्वर्ग की प्राप्ति हो, राजा बलि कि इस मनोइच्छा का भान देव इन्द्र को होने पर, देव राज इन्द्र का सिहांसन डोलने लगा। जब देवराज इंद्र को कोई उपाय नहीं सुझा तो वो घबरा कर भगवान विष्णु की शरण में गयें, और बलि की मंशा बताई तथा उन्हें इस समस्या का निदान करने को कहा। देवराज इंद्र की बात सुनकर भगवान विष्णु वामन अवतार ले, ब्राह्माण वेश धर कर, राजा बलि के यहां भिक्षा मांगने पहुंच गयें क्योंकि राजा बलि अपने दिए गए वचन को हर हाल में पूरा करते थे। जब राज बलि ने ब्राह्माण बने श्री विष्णु से कुछ माँगने को कहां तो उन्होंने भिक्षा में तीन पग भूमि मांग ली। राजा बलि ने उन्हें तीन पग भूमि दान में देते हुए कहां की आप अपने तीन पग नाप ले। वामन रुप में भगवान ने एक पग में स्वर्ग ओर दुसरे पग में पृथ्वी को नाप लिया। अभी तीसरा पैर रखना शेष था। बलि के सामने संकट उत्पन्न हो गया। आखिरकार उसने अपना सिर भगवान के आगे कर दिया और कहां तीसरा पग आप मेरे सिर पर रख दीजिए। वामन भगवान ने ठिक वैसा ही किया, श्री विष्णु के पैर रखते ही, राजा बलि पाताल लोक पहुंच गए। बलि के द्वारा वचन का पालन करने पर, भगवान विष्णु अत्यन्त खुश हुए, उन्होंने आग्रह किया कि राजा बलि उनसे कुछ मांग लें। इसके बदले में बलि ने रात दिन भगवान को अपने सामने रहने का वचन मांग लिया, श्री विष्णु को अपना वचन का पालन करते हुए, राजा बलि का द्वारपाल बनना पडा। जब यह बात लक्ष्मी जी को पता चली तो उन्होंने नारद जी को बुलाया और इस समस्या का समाधान पूछा। नारद जी ने उन्हें उपाय बताया की आप राजा बलि को राखी बाँध कर उन्हें अपना भाई बना ले और उपहार में अपने पति भगवन विष्णु को मांग ले। लक्ष्मी जी ने ऐसा ही किया उन्होंने राजा बलि को राखी बाँध कर अपना भाई बनाया और जब राजा बलि ने उनसे उपहार मांगने को कहाँ तो उन्होंने अपने पति विष्णु को उपहार में मांग लिया। जिस दिन लक्ष्मी जी ने राजा बलि को राखी बाँधी उस दिन श्रावण पूर्णिमा थी। कहते है की उस दिन से ही राखी का तयौहार मनाया जाने लगा।

# काँवर यात्रा की ढेर सारी शुभकामनायें !

हिंदू पुराणों के अनुसार, काँवड़ यात्रा अमृत के महासागर या समुद्र मंथन के साथ जुड़ी हुई है। धार्मिक ग्रंथों का कहना है कि समुद्र मंथन के कारण अमृत निकलने से पहले विष से भरा एक घड़ा बाहर निकला। इस विष को भगवान शिव ने अपने कण्ठ (गले) में धारण कर लिया और अमृत देवताओं को वितरित कर दिया। इस विष को अपने कण्ठ में ग्रहण करने के कारण भगवान शिव का कण्ठ नीले रंग का हो गया, जिसके लिए उन्हें "नीलकंठ" का नाम दिया गया। उन्होंने अपने गले में जलन महसूस की इसलिए विष के प्रभाव को कम करने के लिए, देवी और देवताओं ने भगवान शिव का गंगा जल से अभिषेक किया।

प्रत्येक वर्ष सावन के महीने में भगवान शिव के भक्तों द्वारा की जाने वाली पवित्र यात्रा को काँवर यात्रा कहते हैं। काँवरिये गंगा नदी से जल इकट्ठा करने के लिए हिंदू तीर्थस्थलों की यात्रा करते हैं और फिर स्थानीय भगवान शिव के मंदिरों में गंगा जल से भगवान शिव का अभिषेक करते हैं। पवित्र जल घड़ों में भरा जाता है और भक्तों द्वारा उनके कंधे पर बाँस से बने एक छोटे ध्रुव पर ले जाया जाता है, जिसे "काँवड़" कहा जाता है। इसलिए इन शिव भक्तों को लोकप्रिय रूप से "काँवरिया" कहा जाता है और संपूर्ण तीर्थयात्रा को "काँवर यात्रा" कहा जाता है। कुछ धार्मिक स्थलों की यात्रा हरिद्वार के गंगोत्री, उत्तराखंड के गौमुख और बिहार के सुल्तानगंज आदि से प्रारम्भ होती है।

# स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत खुले मे शौच से मुक्ति के सम्बन्ध में जागरूकता हेतु एक मार्मिक अपील

*जागो युवा जागो स्वच्छ भारत है तुम्हारा अधिकार लेकिन पहले उठाओं पहले कर्तव्य का भार*

*मैं नहीं तू , तू नहीं मैं*
*सदा करते है तू तू मैं मैं*
*करो कोई भी अच्छा काम*
*बढ़ाये जो भारत देश का नाम*
*देश की धरोहर पर है सबका अधिकार*
*फिर क्यूँ है इसकी सफाई से इनकार*
*नहीं है कोई बहुत बड़ा उपकार*
*बस करना है जीवन में बदलाव*
*शहर को मानकर घर अपना*
*निर्मल स्वच्छ है उसे भी रखना*
*कूड़े दान में फेंको कूड़ा*
*हर जगह न फेंको पुड़ा*
*थूकने को नहीं है धरती मैया*
*बदलो अपनी आदत भैया*
*न करो किसी पड़ोसी का इंतजार*
*देश है सबका बढ़ाओ स्वच्छता अभियान*

***स्वच्छ भारत मिशन बलिया***

**श्री दिनेश कु० विश्वकर्मा**
*( अधिशाषी अधिकारी )*

**श्री अजय कुमार**
*( अध्यक्ष )*

# Contact Us

: www.fageosystems.in

: info@fageosystems.in

**Tel/Fax** : 01204349756